01/11/2020

परमपूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित वेबिनार में माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी का संबोधन

———

- मुझे आप सबके बीच वर्चुअल माध्यम से जुड़ कर बहुत प्रसन्नता हो रही है। आज परम पूज्य गणिनी प्रमुख 105 स्वस्ति भूषण माताजी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में हम सब एकत्र हुए हैं। यह हम सब का परम सौभाग्य है कि माता जी का मार्गदर्शन हमें सहज सुलभ है। आपकी सत्प्रेरणा से आज जहाजपुर एक प्रमुख जैन तीर्थ बन गया है। अनेक गृहस्थों का आपने अपने पुनीत प्रवचनों से मार्गदर्शन किया है। आपके पदविहार की चर्चा से हम भी प्रेरित होते हैं। आपको श्रद्धा पूर्वक नमस्कार करता हूँ।

- साथियो, हमारा देश भारत अध्यात्म के साथ-साथ हमेशा से ही शांति और मानवता के प्रति प्रेम का केंद्र रहा है। वेदों और उपनिषदों जैसे हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में भी आध्यात्मिकता और विश्व शांति की बात कही गई है। हमारे जनमानस और संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम अर्थात 'पूरा विश्व हमारा परिवार है' की सर्वव्यापी भावना निहित रही है।
- इतिहास में झांकने की कोशिश करें, तो हम पाते हैं कि जैन धर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में विकसित होने के कारण इसे बौद्ध धर्म के समकालीन माना जाता है।
- जैन मत की स्थापना के सिलसिले में 24 तीर्थंकरों की एक लंबी परंपरा का वर्णन किया जाता है। ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे। महावीर अंतिम तीर्थंकर थे।
- दरअसल तीर्थंकर उन्हें कहा जाता है, जो मुक्त हैं। इन्होंने अपने प्रयत्नों के बल पर बन्धन को त्यागकर मोक्ष को अंगीकार किया है। जैन परंपरा में तीर्थंकर को आदरणीय पुरूष कहा जाता है। इनके बताए हुए मार्ग पर चलकर मानव बंधन से मुक्त हो सकता है।
- जैन तीर्थंकर परंपरा से ही जैन दर्शन का विकास हुआ है। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के समय से जैन मत का विकास और प्रचार-प्रसार हुआ और जैन धर्म पुष्पित और पल्लवित हुआ है।
- जैन धर्म की दिगंबर परंपरा में किसी भी वस्तु के संग्रह को वर्जित माना गया है। जैन धर्म में अहिंसा पर सर्वाधिक जोर दिया गया है। जैन धर्म की मान्यताएं दरअसल इतनी व्यापक और विशाल हैं कि यह जीव और जड दोनों की सत्ता को स्थापित करता है।
- जैन धर्म की मान्यताएं कितनी विशाल हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि जैन धर्म में मान्यता है कि जीव का निवास केवल मनुष्यों, पशुओं और पेड पौधों में ही नहीं है बल्कि धातुओं और पत्थरों जैसे पदार्थों में भी निहित है।

- साथियो, सत्य और अहिंसा में विश्वास रखना भारतीय सभ्यता और संस्कृति का शाश्वत चिंतन है।
- अहिंसा परमो धर्म भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। यह तत्व हमारे देश की मिट्टी में ही रचा बसा है। यह हमें बचपन से ही एक संस्कार के रूप में मिलता है। भारतीय मनीषियों ने इस अहिंसा परमो धर्म के तत्व के लिए बड़े त्याग और तपस्याएं की हैं।
- भगवान महावीर ने कहा था कि सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान ही अहिंसा है और अहिंसा शक्तिशाली लोगों की पहचान है।
- भगवान महावीर का उपदेश था "जियो और जीने दो"। उन्होंने यह स्पष्ट संदेश दिया था कि जीव हिंसा की भी अनुमति नहीं दी जा सकती क्योंकि उसमें भी वही प्राण है, जो हममें है।
- सभी जीवों के प्रति दयालुता का संदेश उनका मूल संदेश था। अहिंसा के प्रति उनका यह आग्रह ही जैन धर्म के मूल में है। हिंसा से शांति संभव नहीं। जब कभी भी अहिंसा पर चर्चा होती है तो सदैव यही ख्याल आता है कि हमें मन, वचन और कर्म से भी अहिंसक होना आवश्यक है। शांति मन के अंदर से उपजने वाली भावना है। इसलिए पहले प्रयास यह करना होगा कि किस प्रकार मनुष्य का मन शांत हो। इसके लिए ज्ञानामृत का पान करने की आवश्यकता है।
- हम सबको, विशेष रूप से हमारे युवा वर्ग को यह समझना चाहिए कि आर्थिक विकास का मूल आधार भी शांति ही है। यदि हमें आर्थिक और राजनीतिक महाशक्ति बनना है तो निश्चय ही इस विशाल एवं अपार युवा शक्ति का सकारात्मक उपयोग किया जाना चाहिए। भारत का मूलभूत गुण इसकी एकता, सहनशीलता और धार्मिक सद्भावना रही है।
- विभिन्न धर्मों के अनुयायियों को यह याद रखना चाहिए कि किसी भी धर्म की नींव घृणा और हिंसा पर नहीं रखी गई। हम यहां पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भी याद कर सकते हैं।
- उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की बुनियाद ही सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर रखी थी। इसी सिद्धांत पर उन्होंने संपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम को संचालित किया था। यह अहिंसा का एक अभिनव प्रयोग था। हम कह सकते है कि गांधी जी के जीवन एवं दर्शन पर जैन आचार्यों के अहिंसा के विचारों का बडा प्रभाव था।
- श्री दिगंबर जैन महासमिति इन समृद्ध जैन मान्यताओं, परम्पराओं और दर्शन की विरासत को आगे बढ़ाने में बहुत सराहनीय भूमिका निभा रही है। पूरी दुनिया में जैन धर्म की पावन मान्यताओं और सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार और इनके संरक्षण में महासमिति का योगदान विशेष रूप से प्रशंसनीय रहा है।
- जैन धर्म के उपदेशों में न केवल अहिंसा पर बल दिया जाता है बल्कि मानवता की सेवा पर भी बल दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप हमें अपने आस-पास इतने सारे अस्पताल, स्कूल और लोक हित के अन्य संस्थान दिखाई देते हैं जिनकी स्थापना और प्रबंधन जैन धर्म के लोगों द्वारा किया जा रहा है। उनके जनहित के कार्यों से सभी की भलाई के लिए जन सेवा किए जाने और लोकोपकारी कार्य किए जाने की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- मित्रो, यह सराहनीय है कि महासमिति ने परमपूज्य माता जी के अवतरण दिवस को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया।

- मुझे इस समारोह में शामिल होने का अवसर देने के लिए मैं एक बार फिर से डॉ मणीन्द्र जैन जी और अन्य सदस्यगणों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

- मैं इस समारोह के आयोजकों और इससे संबद्ध सभी व्यक्तियों के अथक प्रयासों के लिए उनकी सराहना करता हूँ।

- इस स्मरणीय अवसर पर, मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप स्वस्ति भूषण माता जी के उपदेशों को जीवन में, अपने व्यवहार में उतारेंगे। मैं आप सभी के भावी प्रयासों में सफलता की कामना करता हूँ और अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।